सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, | मार्च-अप्रैल, 2015

एकमात्र सच्चा परमेश्वर

"और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझे जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है और ईसा मसीह को जानें जिसे तने भेजा है।" (यूहन्ना 17:3)

यीशु मसीह, "अनंत जीवन", "सनातन सत्य" और "सनातन सिद्धांतों" के आधार पर ही बातें करते हैं। सारी मानवता पर उनका अधिकार है और वही उन्हें अनन्त जीवन देते हैं। यही जीवन यीशु में था। यीशु इस दुनियो में सनातन सिध्दांतों को लेकर आए जो मनुष्य को अनंत जीवन देता है। पाप आपका दुश्मन है। वह आपके शरीर को बर्बाद करता है। वह एक ऐसा शत्रु है जो आपके आत्मा को चोट पहँचाता है। आपका जीवन और परमेश्वर के उद्देश्वयों के प्रति वह आपको बेकार कर देता

एकमात्र सच्चा परमेश्वर... पृष्ठ 3 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

Star Utsav

चैनल पर

हर **रविवार सुबह 7:30 से 8:00** बजे

यीशु : हमारे पापों के लिए प्रायश्चित बना

'परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण बेधा गया, वह हमारे अधर्म के कामों के लिए कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए।' (यशायाह 53:5)

यशायाह की पुस्तक अध्याय 53 में हम पवित्र वचन के ऐसे भाग को पाते हैं, जो सुन्दरता में बेजौड़ और हृदय विदारक है। कृपया पूरा भाग पढ़ें। जहाँ यशायाह ने, मसीह के प्रायश्चित्त बलि बनकर मरने का स्पष्ट और जीती-जागती भविष्यवाणी की है। यह बात याद रखें कि वास्तव में यह घटना घटने से सात सौ साल पहले ही, यशायाह ने ये भविष्यवाणी की है। बाइबल का, यह एक और अनूठा पहलू है। नबियों ने नबूवत कर बताया कि मानव जाति का उद्धारकर्ता आने वाला है। वह उनके पापों का प्रायश्चित्त करेगा।

मानव दिल में एक गहरी इच्छा है। वो यह कि अपने पाप और विद्रोह के प्रति, परमेश्वर के न्यायपूर्ण क्रोध को, वह किसी भी तरह शान्त कर पाए। अलग-अलग चढ़ाई जानेवाली बलि के रूप में लोग इसे अभिव्यक्त कर रहे हैं। इन में से कई बलि, मनुष्य के पापों का प्रायश्चित के उद्देश्य से की गई हैं। मगर पवित्र परमेश्वर के हृदय को, कोई भी चढ़ावा, कैसे प्रसन्न कर पायेगा? चाहे वह सजीव हो या निर्जीव, कीमती हो या सस्ता। परमेश्वर के लिए हमारे पाप बयान से परे घृणित और घिनौने हैं। जीवित परमेश्वर को हम अपनी किसी भेंट से प्रसन्न कर पायेंगे, और स्वर्ग जाने का मार्ग खरीद लेगें - यह एक काल्पनिक बात है।

मगर परमेश्वर ने बलि चढ़ाने के लिए मेमना ढूँढ लिया है। - उनका अपना ही पुत्र, जो उनके ही स्वरूप का हूबहू प्रतिरूप है। इस तरह, जब हम निराशा में थे, उद्धारकर्ता इस दुनिया में आये। यरूशलेम की शहरपनाह के बाहर, कलवरी नामक स्थान पर अपना जीवन बलिदान किया। हमारे पापों के लिए और सारी मानव जाति के पापों के लिए, उन्होंने अपने जीवन को बलि के रूप में चढ़ाया। त्यागे गए, घृणा

और तिरस्कार सहा। लोगों ने उन पर थूका और उनका मज़ाक उड़ाया। ऐसी क्रूरता वाले क्रूस पर वो मरे थे।

कलवरी के क्रूस की विशाल कीमत आंकी नहीं जा सकती। पाप से वे अनजान थे। उन्होंने कभी पाप नहीं किया। फिर भी मेरे और तुम्हारे पाप, उन्होंने अपने ऊपर ले लिये। हम, जो साधारण नश्वर प्राणी है, हम भी कई बार अपने पापों से घृणा करते है। यहाँ तक कि हम कई बार, अपने आप को दुबारा मैला ना करने की व्यर्थ प्रतिज्ञायें करते है, लेकिन यह सब निरर्थक है। मगर पाप रहित उद्धारक स्वर्ग के पवित्र आवरण को छोड़कर इस दुनिया में आये। ये प्रेम अतिपवित्र और उच्च स्तर का है।

बाइबल कहता है, 'इस प्रकार मनुष्य के रूप में प्रकट होकर, स्वयं को दीन किया और यहाँ तक, आज्ञाकारी रहे कि मृत्यु वरन् क्रूस की मृत्यु भी सह ली।' (फिलिप्पियों 2:8) मनुष्य के पाप का दण्ड अदा करने के लिए, उन्हें और अधिक अपने आपको दीन करना पड़ा। - एक 'अमर' को मृत्यु का अपमान सहना पड़ा, और यहाँ तक कि एक अपराधी की मृत्युदण्ड की तरह। यहूदा इस्करियोती जो उनका ही चेला था, उससे धोखा खाया। अक्षरश। तीस चाँदी के सिक्कों के लिए उसने बेच दिया। आज ऐसे कई लोग हैं जो इस से भी कम पैसों के लिए मसीह को धोखा देते हैं।

उस लालच के बारे में सोचिये, जो इस बिमार, आधुनिक समाज ने उत्पन्न किया। ऐसी झूठ, उस के लिए कुछ भी नही; धोखेबाजी एक छोटी सी बात है; अपने शरीर अनैतिकता में लगा देते है; हराम की कमाई के लिए, अपनी आत्मा तक बेच देते है।

मसीह और पैसों के बीच, यहूदा को किसी एक का चुनाव करना था; उसने पैसे चुन लिये। यहूदा की तरह, कई, आज पैसों को ही चुन रहें है। नैतिक मूल्यों को तुच्छ समझते हैं। और अपनी आत्माओं को शैतान के वश में कर रहें है।

'वह तुच्छ जाना गया और मनुष्यों का त्यागा हुआ था। वह दुखी पुरुष था और पीड़ा से उसकी जान पहचान थी। वह ऐसे मनुष्य के समान तुच्छ जाना गया जिस से लोग मुख फेर लेते हैं, और हमने उसका मूल्य न जाना।' (यशायाह 53:3) दुख भरे ये शब्द आज भी कितने सच है। जब तक यीशु न आये, इससे पहले परमेश्वर मनुष्य बन कर, मनुष्यों के बीच रहने कभी भी नहीं आये; इससे पहले, पृथ्वी पर ऐसा कोई नही था, जो यीशु के आने से पहले पाप रहित और अशुद्धता से अछूत रहकर इस पृथ्वी पर चला हो। फिर भी वह (यीशु) तुच्छ जाना गया और मनुष्यों का त्यागा हुआ था। उनकी बेजोड़ पवित्रता, लोगों को उनकी अशुद्धता के लिए कड़ाई से धिक्कारती है। इसलिए लोग आज भी यीशु की बजाय, चाहे कोई भी हो किसी दूसरे को अपना मानना पसन्द कर रहें है।

यह उनका पाप नहीं था जो ऐसी घिनौनी मृत्यु उनपर लाया। बल्कि हमारे अपराधों और पापों के कारण ही, वह बेधा गया। हमारे पापों को अपने शरीर के ऊपर लिया। इससे केवल शारीरिक पीड़ा ही नहीं हुई, बल्कि उनके आत्मा पर एक भार बनकर उन्हें दबाया। मैं इसका एक उदाहरण देता हूँ। एक सेना शिविर में, वहाँ रहने वाले आदमी से अपराध हो गया। वहाँ का मेजर बहुत सख्त आदमी था। क्योंकि अपराध का दण्ड तंबू में रहनेवाले किसी न किसी को चुकाना ही पड़ेगा, उसने चाहा कि अपराधी, अपनी गलती कबूल कर ले। उसे एक भारी कोड़े

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

से 50 कोड़े खाने पड़ेगें। तकरीबन सब जानते थे कि वह अपराधी कौन था। मगर किसी ने भी आकर अपनी गलती नही मानी। अफसर को निराश करते, एक छोटा ढोल बजाने वाला सामने आया। और उस लड़के ने कोड़े खाने की मांग की।

वह एक क्रूर दृश्य था। उस भारी चाबुक के नीचे, क्योंकि एक छोटा कमजोर लड़का है इसलिए सजा की कड़ाई कम होने वाली तो नहीं है। जैसे कोड़े पड़ते गये, विल्ली तब तक साहस के साथ कोड़ों की मार सहता रहा जब तक वह और आगे बरदाश्त नही कर पाया। वह नीचे गिर पड़ा। निर्दोष विल्ली को कोड़े खाते देखकर, असली अपराधी सह नही पाया। उसने आगे आकर खुद कोड़े खाने की माँग की। मगर विल्ली को दण्ड के बचे कोड़े भी खाने पड़े।

उस के बाद विल्ली दुबारा स्वस्थ नही हुआ। विल्ली की मृत्युशय्या पर, असली अपराधी रॉबर्ट रोता हुआ बोला, 'विल्ली, तुम ने ऐसा क्यों किया? मेरा दण्ड तुम ने क्यों अपने ऊपर लिया?'

वह ढोल बजाने वाला लड़का मसीह को जानता था। उसको लगा कि रॉबर्ट की सजा उसे अपने ऊपर लेनी चाहिए। चाहे उस में उसकी जान भी चली जाए, फिर भी। हाँ हमारे अनमोल प्रभु यीशु ने हमारे पापों को अपने शरीर पर ले लिया। हमारे स्थान पर वो मरे ताकि हमारे पापों से हमें छुटकारा मिले। और एक विजयी और अति सुन्दर जीवन, हम जिएं, जो वह (यीशु) हमें देते है।

- जोश्आ दानिएल

हमारे लिए एक बालक ... पृष्ठ 1 से

है। आपकी सारी योग्यताओं को और जितनी भी शक्तियों को परमेश्वर ने आपमें भरा है, उनको मिटा देता है।

परमेश्वर ने जिन सकारात्मक शक्तियों को आपर मे भरा है, वे सब खाली हो जाती हैं। जब तक कि आप मन-परिवर्तन पाकर, मसीह का जीवन न पा लें, तब तक आध्यात्मिक बातों के लिए आपमें रूचि नहीं जगेगी। सिर्फ "मन-परिवर्तन" के अनुभव से ही आप "एकमात्र सच्चे परमेश्वर" को जान पाओगे। जवानी की शुरुआत में ही उनको जानना, कैसी आशीष भरी बात है! एक महान् उद्देश्य से परमेश्वर ने आपको सृजा है और आप के लिए उनकी एक महान् योजना है। अपनी सारी शक्तियों को वो आप में भरने के लिए तैयार हैं। ऐसे महान् परमेश्वर को जानना कैसा महान् आशीष है!

हम ईसाई अधिक्तर यह भूल जाते हैं कि हम एक महान् राजकुमारे के बेटे और बेटियाँ हैं। यीशु ने अपने चेलों को परमेश्वर के सामने पेश किया और कहा, "इन लोगों ने तेरे वचन को मन से अपना लिया है।" चेलों के लिए यह कितनी रोमांचकारी और आश्वासन से भरी बात रही होगी। परमेश्वर के सामने उनके स्तर की कैसी घोषणा है।

परमपिता की महिमा को धरती पर यीशु की विनम्र सेवा के द्वारा उन लोगों ने देखा। यीशु प्रार्थना कर रहे थे कि वे और अधिक देखें और सदा उनके साथ रहें। 24वे पद में यीशु प्रार्थना करते हैं, "हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तूने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ , वहाँ वे भी मेरे साथ रहें, कि वे मेरी उस महिमा को देख सकें जो तूने मुझे दी है, क्योंकि तूने जगत की उत्पत्ति से पहिले से प्रेम किया है।" यीशु चाहते हैं कि जहाँ वो रहते हैं, वहाँ हम भी उनके साथ रहें।

भौतिक नियमों की खोज-बीन करने के लिए वैज्ञानिक कठिन परिश्रम करते हैं। मगर ईसा मसीह परमेश्वर के शाश्वत सत्य को स्पष्टता और पूर्णता से देने के लिए इस दुनिया में आए। जितना ज़्यादा ये सत्य आपके मन में आता है और व्यवहार में आता है उतना ज़्यादा आप यीशु समान बनेंगे। यीशु आगे 17वें पद में प्रार्थना करते हैं, "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर - तेरा वचन सत्य है।" मसीह को जानकर हम कितने सौभाग्यशाली बनेंगे। जैसे-जैसे आप उनके वचन को पढ़ोगे हो और ग्रहण करोगे, उतना ही वह वचन आपको शुद्ध करता जाएगा। आप पवित्र आत्मा से और भर जाओगे और आशीष बन जाओगे। जब से आपने ये अनंत जीवन पाया है क्या आप किसी दूसरे के लिए आशीष का कारण बने हो?

यीशु ने हमें अपना वचन दिया है। छुट्टियों में अपना समय बरबाद मत करो। परमेश्वर के वचन का अध्ययन कर उसे अपने मन में बसा लो। परमेश्वर चाहते हैं कि आप उनके प्रतिनिधि बनें और उनकी सारी शक्तियों का उपयोग करें। अपने स्वामी जैसा

बनने का लक्ष्य रखो। ईसा मसीह ही आपको वैसा बनायेंगे। क्या मसीह में आपको कोई दोष नज़र आता है? कोई खोट या कोई असफलता नज़र आती है? बिलकुल नहीं! परमेश्वर ने हमें कैसा सिद्ध और अद्भुत उद्धारकर्ता दिया है!
- एन दानिएल।

ज़रा ठहरिए!

सवाल: क्या आप अच्छे हैं?
जवाब: हाँ, सब ठीक है।

सवाल: वैसा ही रहने की उम्मीद है?
जवाब: वह तो सहज बात है।

सवाल: आप निराश हो सकते हैं?
जवाब: यह भी संभव है।

सवाल: बेहतर होगा कि आप तैयार हों?
जवाब: वह बुद्धमानी होगी।

सवाल: आप सही साबित होना चाहते हो?
जवाब: ये तो बड़ी खुशी की बात है।

सवाल: इसे कैसे पाएँ क्या आपको पता है?
जवाब: नहीं! तब सुनिए!

1.) आपको उद्धार पाने की ज़रूरत है!
"इसलिए कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों 3:23)
"क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है।" (रोमियों 6:23)

2.) आप खुद अपनी ताकत से अपने आप को बचाने में असमर्थ हो!
"तो उसने हमारा उद्धार किया, यह हमारे द्वारा किए गए धर्म के कामों के आधार पर नहीं, बल्कि उसने अपनी दया के अनुसार यह किया।" (तीतुस 3:5)
"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है - और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन परमेश्वर का दान है, यह कार्यों के कारण नहीं जिससे कि कोई घमण्ड करे।" (इफिसियों 2:8-9)

3.) केवल यीशु मसीह ही आपको मुक्ति दे सकते हैं!
"मसीह भी सब के पापों के लिए एक ही बार मारा गया, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी, जिस से वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए।" (1 पतरस 3:18)
"हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे, हम में से प्रत्येक ने अपना-अपना मार्ग ले लिया, परन्तु यहोवा ने हम सब के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" (यशायाह 53:6)

4.) आपके हिस्से का काम!
("जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो। दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच-विचार छोड़कर यहोवा की ओर फिरे, और वह उस पर दया करेगा।" (यशायाह 55:6-7)
"प्रभु यीशु पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।" (प्रेरितों के काम 16:31)
"कल के दिन के विषय में शेखी न मार, क्योंकि तू नहीं जानता कि दिनभर में क्या हो जाएगा।" (नीतिवचन 27:1)
(वे ऑफ लाइफ, डंगनॉन, उत्तरी आयरलैण्ड द्वारा वितरित)

सत्य की परख!

"परन्तु अपराधी सब के सब मर मिटेंगें, दुष्टों का अन्त सर्वनाश है। धर्मियों का उद्धार तो यहोवा से है, संकट के समय वह उनका बल है।"
भजन संहिता (37:38-39)

परमेश्वर का पीछा करना

सन् 1897 पेन्सिल्वेनिया, अमरीका में किसानों के एक छोटे समाज में ऐडन विल्सन टोज़र का जन्म हुआ। किशोरावस्था में वह ओहायो राज्य में रहते हुए वहाँ एक रबड़ की फैक्टरी में काम करने लगा।

एक दिन दोपहर के समय काम से घर लौटते समय टोज़र ने सड़क के उस पार छोटी सी भीड़ को देखा। एक बूढ़े आदमी के चारों ओर खड़े लोग उसकी बातें सुन रहे थे। उत्सुकता से उसने सड़क पार की।

पहले तो टोज़र को उस आदमी की कही बातें समझ नहीं आई। क्योंकि उस आदमी के बोलने का लहज़ा जर्मन भाषा का था, टोज़र को बड़े ध्यान से सुनने की ज़रूरत पड़ी। तब उसे समझ

आया कि वह आदमी बाईबल से परमेश्वर के वचन का प्रचार कह रहा है! "प्रचार करने के लिए क्या इस आदमी का कोई गिरजाघर नहीं है", टोज़र ने आश्चर्य जताया? और आज रविवार भी नहीं है! और ये इतना उत्साह में क्यों है? फिर भी इस सड़क-प्रचारक के शब्द उस पर असर करने लगे।

टोज़र यह सुनकर अश्चर्यचकित हो गया, जब प्रचारक ने कहा, "अगर तुम नहीं जानते कि कैसे उद्धार पाना है, तो सिर्फ परमेश्वर को पुकार कर कहो, 'हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।' और परमेश्वर तुम्हारी सुन लेंगे।" टोज़र पर कम से कम असर छोड़ने वाले यही शब्द थे।

ये शब्द टोज़र के दिल में आग की तरह जल रहे थे। घर जाते समय भी वह इन शब्दों के बारे में सोच रहा था। उन शब्दों ने उसके दिल में हलचल मचा दी थी और परमेश्वर को पाने की तेज भूख को जगा दिया।

उद्धार! अगर तुम नहीं जानते कि कैसे उद्धार पाना है, तो सिर्फ परमेश्वर को पुकारो....'हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर।'

टोज़र घर पहुँचते ही सीधा अटारी पर चढ़ गया। शायद वहीं पर एक अद्भुत काम हुआ होगा। क्योंकि जब वह वहाँ से उतरा तो मसीह यीशु में नई सृष्टि बन चुका था।

टोज़र जिस घर में रहता था वहाँ साथ में बहुत लोग थे। प्रार्थना और बाईबल अध्ययन करने और परमेश्वर के साथ एकांत में समय बिताने के लिए उसे एक जगह की ज़रूरत थी। तहखाने में भटठी के पीछे उसने एक छोटी सी जगह को इस काम के लिए साफ कर दिया। वह एक शरणस्थान की तरह बन गया।

टोज़र परमेश्वर का जन बना, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ नज़दीकी संगति का आनंद उठाता था। वो परमेश्वर की संगति का अभ्यास करता था और पूरे मन से यीशु मसीह की अराधना करता। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं, जैसे - "दा परस्यूट ऑफ गॉड"

"मैं परमेश्वर के प्यासे मन वालों से बात कर रहा हूँ", उन्होंने लिखा, "जिसने परमेश्वर का स्पर्श पाया, उसके मन की इच्छा जाग उठी और ऐसे लोगों को किसी तर्कीय सबूत की ज़रूरत नहीं है। उनका प्यासा मन ही उनके लिए सारे सबूतों को पेश करता है।"

अपने सृजनहार, एकमात्र परमेश्वर के लिए, वह एक भूखा-प्यासा आदमी था। "दा परस्यूट ऑफ गॉड" पुस्तक में वे लिखते हैं "हे परमेश्वर आपकी भलाई को मैं जान गया हूँ। उसने मुझे तृप्त किया है और मेरी प्यास को और बढ़ाया है। आपसे और अधिक अनुग्रह पाने की ज़रूरत का मुझे दर्द भरा एहसास है। अपने मन में इच्छा की कमी को देख मैं शर्मिंदा हूँ। हे परमेश्वर, त्रिएक परमेश्वर, आपको पाने की चाहत की मुझमें चाह है। आपकी लालसा से भर जाने के लिए मैं तरस रहा हूँ और अधिक प्यासा बनने की मुझ में प्यास है। मुझे अपनी महिमा दिखा, मैं तुझ से विनती करता हूँ ताकि मैं तुझको सच में जान पाऊँ। अपनी दया से मुझमें प्यार का एक नया काम शुरु कर। फिर मेरे प्राण से कह, "उठ मेरे प्यार, मेरे प्रिय, मेरे पास आ।" इस कोहरे से भरी तराई में, मैं लंबे समय से भटक रहा हूँ। वहाँ से उठकर अपने पीछे चलने का अनुग्रह मुझे प्रदान कर।"

टोज़र ने अपनी किताब में लिखा "जो परमेश्वर अपनी महिमा में है, हम उसके छोटे प्रतिरूप हैं (अपने पापों को ध्यान में रखते हुए।)", ("परमेश्वर के स्वरूप में बनाए जाने के कारण, उनको जानने की हम में क्षमता है। अपने पापों के कारण सिर्फ सामर्थ की कमी है। पवित्र आत्मा हममें जीवन डालकर जैसे ही पुन:जीवित करता है, उसी पल हमारे पूरे व्यक्तित्व में परमेश्वर के साथ नाते का एहसास होता है और यह जानकर हमारा मन खुशी से झूम उठता है। यह स्वर्गिय जन्म है जिसके बिना हम परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकते। ये सिर्फ शुरुआत है, अंत नहीं। क्योंकि परमेश्वर की असीम संपत्ति को पाने की उस हमारे खुशहाल मन के भव्य खोज की अब शुरुआत होती है।-एल सिंडर द्वारा लिखित "इन परस्यूट ऑफ गॉड : दा लाइफ ऑफ ए डब्ल्यू टोज़र" और ए. डब्ल्यू. टोज़र द्वारा लिखित "दॉ परस्यूट ऑफ गॉड" पढ़ें।

कभी न छोड़ा गया, न त्यागा गया

लिलियन ट्रॅषर (1887-1961) एक निर्भीक महिला थी। सन् 1910 में वह मिस्र देश पहुँची। और अगले साल से वहाँ के अनाथ बच्चों की देखबाल करने लगी। महान् ज़रूरतों में वह अक्सर परमेश्वर के कार्यों को देख पाई।

आपूर्ति -

दूसरे विश्व युद्ध के दौरान, इटली के लोगों ने (जो जर्मनी के साथ मिले हुए थे) मिस्र देश पर हमला किया। युद्ध के कारण बहुत कठिनाईयाँ पैदा हुईं। उन दिनों वह 900 बच्चों की उस अनाथालय में देखभाल कर रही थी और अक्सर खाने-कपड़ों की ज़रूरत रहती थी। सितंबर, 1941 के आते, कई बच्चों के कपड़े घिस कर पुराने हो गए थे और खाना भी सीमित था।

एक रात के भोजन के समय, लिलियन ने घोषणा की, कि इस गंभीर परिस्थिति के लिए प्रार्थना करने के लिए अगले चौबीस घंटे सब काम बंद और पाठशाला भी बंद रखी जाएगी। लिलियन ने लड़कियों के शयन कक्ष में सच्चे मन से की जाने वाली प्रार्थनाओं को सुना। एक नन्ही लड़की फिगा, जिसका सिर किसी त्वचा के रोग के कारण मुंड़ा हुआ था, उसने बड़ी सुंदर प्रार्थना की, "प्रभु, आपने कहा है कि जब हमारे माँ-बाप हमें छोड़ देते हैं तो आप हमें संभालते हैं। (भजन संहिता 27:10) अभी हमारी ज़रूरतो को पूरा करो। क्योंकि, माँ (लिलियन) कहती हैं कि हमारी मदद करनेवाला और कोई नहीं है।"

लिलियन की आँखों में आँसू भर आए। फिगा कितना सही कह रही थी। एक चमत्कार ही उनकी मदद कर सकता था।

सारे बच्चे और स्टाफ प्रार्थना में लग गए। सुबह अमरीकी राजदूत से मिस्र एक तार आया था। "मिस ट्रॅषर, कल आप हमारे यहाँ दोपहर भोजन में शामिल हों।" लिलियन ने आशा जताई कि इन सबका उनकी प्रार्थनाओं से कुछ संबंध है। आधी रात की रेलगाड़ी में वह कायरो के लिए निकल पड़ी और दोपहर तक उनके यहाँ पहुँच गई।

वह राजदूत एक खास समाचार लिलियन से बाँटना चाहता था। अभी-अभी जर्मनी के हाथों ग्रीस पराजित हुआ। रेड क्रॉस के एक नाव को यह समाचार मिला है। उन्हें ग्रीस के समीप ये आदेश मिला कि वे वापस मिस्र के एलेक्ज़ैंड्रीया वापस लौट जाएँ। और एलेक्ज़ैंड्रीया के बंदरगाह में यह भय था कि वहाँ के जहाज़ों पर हमला होगा। उस नाव को आदेश मिला कि अपना सारा माल समुद्र में फेंक दे और रातों-रात समुद्र की ओर निकल पड़े। उस नाव में एक स्कॉटिश नाविक ने कप्तान से विनती की कि माल को फेंकने की बजाय कहीं पर उतार दे। उसे उस अनाथालय के बारे में मालूम था और उसकी माँ हर रोज उस के लिए प्रार्थना किया करती थी। पहले तो कप्तान ऐसा नहीं करना चाहता था। मगर उस नाविक ने ज़ोर दिया। उसने कप्तान को आश्वासन दिया कि सूरज निकलने से पहले ही वे माल उतारकर बंदरगाह से निकल पड़ेंगे। सामान को जल्दी से उतार दिया गया और एक गोदाम में उसे रखा गया।

"बोलिए मिस ट्रॅषर", राजदूत ने पूछा, "क्या इस समय आपको कुछ खाने और कपड़ों की ज़रूरत है? "

कितना अद्भुत प्रबंध - अनाथालय के लिए इतनी सारी वस्तुएं! कुछ समय के बाद लिलियन, राजदूत और रेड क्रॉस के प्रतिनिधि सब उन सामग्री के टोकरों के सामने खड़े थे। उस में हज़ारों चीज़ें, कपड़े और कम्बल, दूध का पऊडर और चावल का ढेर था। लिलियन देखकर रो पड़ी।राजदूत ने बड़ी कोमलता से सारा माल पहुंचाने का खर्चा उठाने का ऐलान किया।

जब बच्चों ने उस शुभ समाचार को सुना तो बड़ी खुशी मनाई। माल पहुँचने के बाद उन्हें खोलने का इंतजार करते समय लिलियन ने धन्यवाद देते हुए प्रार्थना की। परमेश्वर के प्रबंध के लिए वो कितनी आभारी थी।

संरक्षित -

कुछ सालों के बाद मिस्र देश में हैज़ा की महामारी फैली। फिर लिलियन ने बाईबल में मूसा, फिरौन और महामारियों की कहानी पढ़ी। उसने यह वचन दोहराया, "ना कोई महामारी मेरे निवास स्थान के निकट आयेगी।" "इसे मैं एक वादा मानकर लेती हूँ", उसने प्रार्थना की।

सारे बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए परमेश्वर पर उसने भरोसा रखा। उत्तम बात यह थी कि सारे सुरक्षित थे।

इस घटना को बीते ज़्यादा समय नहीं हुआ था कि एक रात स्कूल की घंटी की आवाज़ सुनकर लिलियन जाग उठी। उसका कमरा नारंगी रोशनी से भरा हुआ था। खिड़की के बाहर देखा तो पाया कि लड़कों के सोने के कमरे में आग लगी थी।

लिलियन दौड़कर टेलिफोन के पास गई और अग्निशमन केंद्र को फोन किया। अपनी पोशाक और जूते पहनेकर बाहर दौड़ कर गई। सारे लड़के अब तक बाहर आ चुके थे। लिलियन नहीं चाहती थी कि इनमें से किसी एक भी अनमोल बच्चे को खोए।

अग्निशमन दल तुरंत नहीं पहुँच सका, मगर लिलियन को उन 150 बाल्टियों की याद आई जो उसने सेना से खरीदीं थीं। सभी ने उस आग को काबू में लाने के लिए हाथ बटाया। फिर भी आग की लपटें रसोईघर तक पहुँच गईं।

पानी गरम करने के लिए रखी मिट्टी के तेल की टंकियाँ रसोईघर में थी! अगर आग वहाँ पहुँच गई तो एक भयानक विस्फोट हो सकता है। आग को बुझाने के लिए लड़के पूरी कोशिश कर रहे थे। मगर आग और बढ़ रही थी। लिलियन भय से घुटनों के बल गिर पड़ी, "कुछ करो प्रभु" उसने प्रार्थना की। "मिट्टी के तेल की टंकियाँ अंदर हैं! कुछ करो! "

आग की लपटों को घूरती वह एक दो मिनट घुटनों पर ही रह गई। अचानक आग बुझ गई और रसोई घर को भी कोई नुक्सान नहीं पहुँचा।

जल्दी ही अग्निशमन गाड़ी पहुँच गई। जब सवेरा हो रहा था, ऐंबूलेंस भी पहुँच गई। उसके ड्राईवर को भरोसा नहीं हो रहा था कि आग में कोई नहीं जला।

केरोसिन की टंकियाँ भी सुरक्षित थी। एक दीवार जो जली थी और उसमें एक खिड़की को खोला गया था जिसमें अखबार भरा हुआ था। दीवार के जलने के निशान से दिख रहा था कि आग की लप्टें अखबार तक आकर रुक गई!

यह एक चमत्कार था। लिलियन उस दिवार पर चढ़ रही आग की लपटों को देखकर घुटनों के बल गिरी और प्रार्थना की। ठीक उसी पल आग बुझ गई होगी। नहीं तो वो अखबार जल जाता और आग कैरोसिन की टंकियों तक फैल जाती। परमेश्वर ने उन्हें सुरक्षा की अनमोल भेंट दी।

-जॅनेट और जॅफ बेन्जी द्वारा लिखित, "लिलियन ट्रॅषर : दा ग्रेटेस्ट वंडर इन ईजिप्ट)) देखें।

बाईबल से वचन
याकूब अध्याय - 3

13 तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रगट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है।
14 पर यदि तुम अपने अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध में घमण्ड न करना, और न तो झूठ बोलना।
15 यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर से उतरता है वरन सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है।
16 इसलिये कि जहां डाह और विरोध होता है, वहां बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है।
17 पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहिले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है।
18 और मिलाप कराने वालों के लिये धार्मिकता का फल मेल-मिलाप के साथ बोया जाता है॥